चेतना की तीन अवस्थाएं

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

असंख्य चेतनामय परमाणुओं के पिण्ड को चेतन कहा जाता है। चेतना आत्मा है। चेतना में विश्वास करने वाले कर्म और पुनर्जन्म में भी विश्वास करते हैं। चेतना को अनेक नामों से जाना जाता है। नाम भिन्न–भिन्न हो सकते हैं। किन्तु भाव सभी का एक ही है। आत्मनिरीक्षण के द्वारा चेतना को जाना जाता है। आत्म विज्ञान का उद्देश्य शाश्वत सुख की प्राप्ति है। आत्मज्ञान के अतिरिक्त सभी सुख क्षणिक हैं। सांसारिक सुख के साथ दुःख जुड़ा हुआ है। यह स्थाई नहीं है। आत्मा एक शाश्वत तत्व है। संसार का सुख अस्थाई है। जड़ कभी भी सुख नहीं दे सकते। सुख चेतना में निहीत है। चेतना के तीन स्तर हैं– जीवात्मा, अंतरात्मा और परमात्मा। जीवात्मा स्वार्थ की चेतना है। अंतरात्मा परार्थ की चेतना है और परमात्मा परमार्थ की चेतना है। जीव का लक्ष्य आत्मा से परमात्मा बनना है।

जीवात्मा मैं और मेरे से जुड़ा हुआ है। इन्द्रिय सुख का ज्ञान जीवात्मा है। यह जन्म–जन्मान्तर में भ्रमण करता रहता है। यह मेरा है, यह तुम्हारा है, धन–दौलत इत्यादि भौतिक सम्पदाओं तक ही यह सीमित रहता है। यही एक अज्ञान है। चार गति और चौरासी लाख जीव योनियों के प्राणी इसीमें भ्रमण करते रहते हैं। मानव को छोड़कर सभी प्राणी अविकसित इन्द्रिय वाले हैं। जीवात्मा से अंतरात्मा की प्राप्ति किसी ज्ञानी पुरुष के माध्यम से ही हो पाती है। ज्ञानी पुरुष अज्ञान के अन्धकार को दूर करके जीवन में ज्ञान का प्रकाश फेलाता है। इससे अनन्तानुबन्धी कषाय नष्ट हो जाता है।

अंतरात्मा से ज्ञान की प्राप्ति होने पर भाव सत्ता बाहर आ जाती है और वह प्रज्ञा का रूप ले लेती है। प्रज्ञा प्रायश्चित करवाती है। यदि हमने किसी को दुःख दिया हो तो वह हमें क्षमा करें। हमें शुद्ध अन्तःकरण से सामायिक, आलोचना, प्रत्याख्यान और प्रतिक्रमण करना चाहिए। धीरे–धीरे अभ्यास से आत्मा परमात्मा की ओर गमन करती है। लिंग शरीर का घनत्व घट जाता है। दो–चार भवों के बाद डिस्चार्ज अहंकार क्षीण हो जाता है। नये कर्मों का बंधन न

होने से कार्मण शरीर शुद्ध हो जाता है। अंहकार के पूर्ण नष्ट हो जाने पर अन्तरात्मा शुद्ध हो जाता है और आत्मा परमात्मा हो जाता है। परमात्मा शुद्ध चैतन्य है।

शरीर पंचभूतात्मक है। चेतना पंचभूतात्मक नहीं है। चेतना के कारण ही पंचभूतात्मक शरीर चेतनवत् प्रतीत होता है। जैन दर्शन आत्मवादी दर्शन है। इस दर्शन में जीवात्मा, अंतरात्मा और परमात्मा का अस्तित्त्व स्वीकृत है। जीवात्मा आत्मा की पहली कक्षा है। इसमें देह और आत्मा का भेद ज्ञान नहीं होता। अंतरात्मा आत्मा की दूसरी कक्षा है। इसमें भेद ज्ञान प्राप्त हो जाता है। इसके उपलब्ध होने पर उसका प्रस्थान अपने देह मुक्त शरीर की ओर हो जाता है। परत्मात्मा आत्मा की सर्वोच्च कक्षा है। इसमें अपने मौलिक रूप में आत्मा अवस्थित हो जाता है। आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति है। यदि कोई अपनी समीक्षा करें और अवगुणों को निकाल दे तो आत्मा परमात्मा बन सकती है।

इस संसार में दो प्रकार के जीव है– 1. मुक्त जीव 2. संसारी जीव। मुक्त जीव को परमात्मा, ईश्वर, सर्व शक्तिमान, सिद्ध, शुद्ध जीव, आदि नाम से जाना जाता है। इन मुक्त जीवों के अतिरिक्त सभी जीव संसारी जीव हैं। जीव का संबंध सांसारिक जीवों के लिए प्रयुक्त किया जा रहा है। संसार में जितने शरीर हैं, उतने जीव हैं। जीव का लक्षण, उपयोगमय, कर्त्ता, स्वदेह परिणामी, संसारी रूप में बताया गया है। जीव का उपयोग लक्षण चेतना है। विश्व में कोई भी ऐसा जीव या प्राणी नहीं है, जिसमें चेतना विद्यमान न हो अर्थात अस्तित्व के रूप में प्रत्येक जीव चेतनयुक्त है।

समस्त जीवों में विकास की क्षमता समान होती है लेकिन पुरुषार्थ के कारण ही कम विकसित या अधिक विकसित जीव दिखाई देते हैं। सम्पूर्ण संसार जीवों से भरा है। संसार में जन्म लेने वाला जीव अज्ञान के कारण ऐसे कर्मों का अर्जन करता है जिसके कारण उसे कर्मों का बंधन होता है। इसलिए प्रत्येक जीव अपने कर्मो का स्वयं जिम्मेदार है और कर्म के परिणामों की भी जिम्मेदारी स्वयं उसकी है यह जीव का कर्त्ता–भोक्तापन की विशेषता है। कर्त्तृत्व व भोक्तृत्व संसारी जीव या जीवात्मा में ही पाया जाता है।

मनुष्य जन्म के सिवा और जितनी योनियां हैं, सभी केवल कर्मों का फल भोगने के लिये ही मिलती हैं। मानव जीवन का परम लक्ष्य आत्मामृत की प्राप्ति ही है। वह आत्मा दो प्रकार की है, एक जीवात्मा दूसरी परमात्मा। परमात्मा या ईश्वर सर्वज्ञ है, और एक है। जीवात्मा प्रत्येक शरीर में भिन्न–भिन्न व्यापक और नित्य है। आत्मा नित्य शुद्ध–बुद्ध मुक्त है। वह सच्चिदानन्द स्वरूप है। यही परम सत है।

जीवात्मा, अंतरात्मा और परमात्मा में कर्मों को लेकर भेद है। प्रत्येक शरीर में जीवात्मा व्याप्त है। अंतरात्मा सभी शरीरों में एक है। आत्मा पर जब कर्मों का आवरण पड़ता है तो आत्मा का प्रकाश अवरुद्ध हो जाता है। जब कर्मरज नष्ट हो जाता है तो आत्मा स्वप्रकाशी हो जाता है। स्वप्रकाशी आत्मा कर्मों के क्षीण होने पर परमात्मा बन जाता है। परमात्मा की अवस्था शैलेशी अवस्था है। इस अवस्था में आत्मा ज्ञान, दर्शन चारित्र और तप से कर्मों को क्षीण कर शुद्ध, बुद्ध, मुक्त बन जाता है। यही आत्मा का स्वाभाविक स्वरूप है। जब आत्मा अपने स्वाभाविक स्वरूप में अवस्थित हो जाता है तो वह मुक्त हो जाता है।